2 दिसम्बर 2019, कुल पृष्ठ : 16, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

वर्ष : 42, अंक : 17
दिसम्बर (प्रथम), 2019 (वीर नि.संवत्-2546)

सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
सह-सम्पादक : परमात्मप्रकाश भारिल्ल

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दिनांक 24 नवम्बर को पंचतीर्थ जिनालय में शान्ति विधान का आयोजन

पंडित भारिल्ल अध्यात्म के संत थे

ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा आयोजित अध्यात्म रत्नाकर पंडित रतन चंद भारिल्ल की श्रद्धांजलि सभा सेक्टर 11 स्थित शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में हुई।

युवा फैडरेशन के प्रक्षाल शास्त्री ...

... ने करीब 50 पुस्तकें लिखी हैं। ... में शांतिनाथ मंदिर के अध्यक्ष ... जैन, शाश्वत धाम के उपाध्यक्ष राजकुमार जैनदर्शनाचार्य, डॉ. ... प्रसाद जैन, अखिल भारती... युवा फैडरेशन के प्रदेशाध... जिनेंद्र शास्त्री, पंडित खेम च... पंडित ऋषभ शास्त्री, भगव...

रतनचंदजी ने जगाई लेखन से आध्यात्म की अलख

जयपुर | आचार्य अमृतचन्द्र (भारत सरकार) पुरस्कार, सिद्धांतसूरी एवं शिक्षारत्न आदि उपाधियों से सम्मानित अध्यात्म-रत्नाकर पंडित रतनचन्द्र भारिल्ल का मूर्धन्य विद्वानों में विशिष्ट स्थान रहा है। 21 नवंबर 1932 को ललितपुर(उत्तरप्रदेश) जिले में जन्मे पंडित रतनचन्द्र जी सिद्धहस्त तथा लेखक होने के साथ पत्रकार भी रहे हैं। जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) के आपआद्य संपादक रहे हैं जिसका 1977 से नियमित प्रकाशन ... इसके अलावा अखिल भार... युवा फैडरेशन के राष्ट्रीय ... रहे हैं। रतन चंद जी की 5... कृतियां हैं। इनके 6 ... उपन्यास हैं। सभी सर्वाधि... हैं। ग्यारह कहानियों का ... हूं, देख रहा हूं', नामक संग्रह भी है। सम्प्रति में ... दिगंबर जैन सिद्धांत मह... प्राचार्य रहे हैं।

जैन विद्वान पं. रतन चंद भारिल्ल को शोक सभा में श्रद्धांजलि अर्पित

मुख्यमंत्री गहलोत व कई गणमान्य लोग भी पहुंचे पुष्पांजलि देने

जयपुर | आचार्य अमृतचंद्र पुरस्कार से सम्मानित दिगंबर जैन समाज के मूर्धन्य विद्वान, दिगंबर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर के यशस्वी प्राचार्य पं. रतनचंद भारिल्ल को बापू नगर स्थित पंडित टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित शोकसभा में श्रद्धांजलि अर्पित की गई। श्रद्धांजलि सभा में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने पं. भारिल्ल के चित्र पर चंदन माला अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। मुख्यमंत्री गहलोत ने शोक व्यक्त करते हुए परिजनों को ढांढस बंधाया। इनके साथ ही पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रदीप जैन आदित्य, दिगंबर जैन महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक बड़जात्या इंदौर, प्रेमचंद बजाज कोटा, अखिल भारतीय जैन युवा फेडरेशन के प्रदेश अध्यक्ष जिनेंद्र शास्त्री, एनके सेठी, महेंद्र कुमार पाटनी सहित अन्य लोगों ने पं. भारिल्ल के व्यक्तित्व व कृतित्व पर विचार व्यक्त किए। 700 से अधिक शास्त्री, विद्वान व विदुषियों ने उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए।

जैन दर्शन के मूर्धन्य विद्वान पंडित रतनचन्द भारिल्ल का निधन

... जैन समाज में शोक की लहर दौड़ गई। उनका ... संस्कार लालकोठी स्थित श्मशान में विधि विधान ... किया गया। आपके अंतिम संस्कार में काफी संख्या ... समाज के गणमान्य लोग शामिल हुए। भारिल्ल मृदुभा... लोकप्रिय लेखक व प्रवचनकार ... पथ प्रदर्शक का निय... ने 1977 से ... संपादन किया। ... अन्य समाजों ...

श्रद्धांजलि सभा : पंडित रतन चंद भारिल्ल को दी श्रद्धांजलि

पंडित रतन चंद भारिल्ल की ... सेक्टर 11 में शनिवार को ... पंडित भारिल्ल अध्यात्म के ... धाम उपाध्यक्ष राजकुमार ... फेडरेशन के प्रदेशाध्यक्ष ... भगवती देवी ... मौजूद थे।

पंडित रतनचंद भारिल्ल के निधन पर हुई शोक सभा

सभा में विचार व्यक्त करते लोग।

खनियांधाना। जैन समाज के मूर्धन्य विद्वान, लेखक, पत्रकार तथा पंडित टोडरमल स्मारक सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर के प्राचार्य पंडित रतन चंद भारिल्ल ... बीमारी के चलते गत मंगलवार को ... निधन के समाचार सुनते ... समाज में शोक ... में खनियांधाना ... नया मंदिर में ... दिवंगत आत्मा ... ना की गई। दो ... कर णमोकार ... किया गया। श्रद्धांजलि ... जैन समाज के अलावा ... महापर्व में खनियांधाना से ... त किया। संचालन अंकित जैन ... ने किया तथा सभा में पं. संजय ... पुजारी, सुनील सरल एकत्व पुजारी, प्रमोद जैन प्राचार्य तथा मुन्नी देवी जैन ने बोलते हुए स्व. बड़े दादा के निधन को जैन समाज की अपूरणीय क्षति बताया।

16/11/2019, नईदुनिया @ सचिन मोदी

पंडित रतनचंद भारिल्ल का निधन

उदयपुर. अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंद भारिल्ल के भाई और मोटिवेशनल स्पीकर एसपी भारिल्ल के पिता, टोडरमल दिगंबर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर के प्राचार्य पंडित रतनचंद भारिल्ल का निधन हो गया। उदयपुर में निवासरत प्रशंसक राजकुमार जैन, डॉ. महावीर प्रसाद जैन, पंडित खेमचंद जैन, ऋषभ शास्त्री ने शोक जताया।। अंतिम दर्शनार्थ कई लोग जयपुर के लिए रवाना हुए। जैन युवा फेडरेशन प्रदेशाध्यक्ष डॉ. जिनेंद्र शास्त्री ने बताया कि पंडित भारिल्ल विद्वान थे। देशभर में 1000 से अधिक शास्त्री विद्वान शिष्य हैं।

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI सुख. शान्ति. समृद्धि प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 42, अंक : 17 सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा आजीवन शुल्क : 251 रुपये

दिसम्बर (प्रथम), 2019 (वीर नि.संवत्-2546) सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

सहस्राधिक शास्त्री विद्वानों के पितामह

परम श्रद्धेय पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल (बड़े दादा) का चिरवियोग ....

देश-विदेश में जैन समाज शोक संतप्त ...

दिनांक 12 नवम्बर /कार्तिक कृष्ण पूर्णिमा का दिन बना अमावस्या। जब कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रहे मुमुक्षु जैन समाज के पुरोधा, हजारों शास्त्री विद्वानों के पितामह, मूर्धन्य विद्वान पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के चिरवियोग की खबर ने देश-विदेश की जैन समाज को शोक संतप्त कर दिया।

आप सादा जीवन उच्च विचार के जीते जागते उदाहरण, शांत व सौम्य मुद्रा एवं अत्यंत सरल व्यक्तित्व के धनी, वात्सल्यमूर्ति, सरल परिणामी, मृदुभाषी, अद्वितीय लेखक, आचार्य अमृतचन्द्र पुरस्कार से सम्मानित, जैनपथप्रदर्शक के संस्थापक सम्पादक, श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर के यशस्वी प्राचार्य थे।

भाई साहब चले गये...

भाई साहब चले गये और मैं अभी बैठा हूँ। जैसा कि अभी मेरा चिन्तन चल रहा है, तदनुसार सब कुछ सहजभाव से स्वीकार करना है; अतः अब मैं सबकुछ सहज भाव से स्वीकार करने का प्रयास कर रहा हूँ। यद्यपि अभी मैं एकदम सहज ही हूँ, तथापि उक्त संदर्भ में नया कुछ लिखने की स्थिति में नहीं हूँ। साढे चौरासी वर्ष पुराना साथ छूट गया।

आज अब अबतक बहुत कुछ बिखर गया है। मेरे छोटे-बड़े दोनों भाई चले गये। बहिन भी चली गईं। अब भाई-बहिनों में मात्र मैं ही बचा हूँ। कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करने वाले बहुत कुछ साथी भी चले गये।

मुझे अब बहुत जीने की चाह नहीं है, जाने की भी कोई जल्दी नहीं है। सुनिश्चित क्रम अनुसार जब तक रहना है, सहजभाव से रहूँगा; जब जाने का काल आ जायेगा, सहजभाव से चला जाऊँगा।

जब तक जो कुछ मेरे द्वारा लिखा जाना होगा, सहजभाव से लिखता रहूँगा। कुछ योजना नहीं है, माथे पर कुछ भार नहीं है, बोझा नहीं है। लौकिक दृष्टि से भी किसी से कुछ कहना नहीं है। जो कुछ कहना है, आतमा के बारे में ही कहना है। जबतक कहना बनता रहेगा, कहता रहूँगा।

सहज, सहज, सबकुछ सहज, एकदम सहज, सहज, सहज बस सबकुछ सहज.....।

सम्पादकीय –

चिरकाल तक उनके ऋणी रहेंगे...

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

सफेद खादी का कुर्त्ता-धोती और उसमें दुबली-पतली सुन्दर देह, सिर पर सफेद टोपी और चेहरे पर शाश्वत मुस्कान – ये थी जिनकी बाहरी पहचान। जैसा बाहर वैसा अन्दर, बालकवत् निश्छल छवि, अन्तर-बाह्य सरलता के धनी, **'जबान से नहीं, जीवन से उपदेश'** की उक्ति को चरितार्थ करनेवाले – ऐसे थे हमारे बडे दादा, विद्वत्शिरोमणी पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल।

आज वे हमारे बीच में नहीं है, किन्तु उनकी उक्त छवि आँखों के सामने घूम रही है। उनके उठने-बैठने, चलने-बोलने, जीवन की प्रत्येक क्रिया से सिर्फ सहजता...सहजता...सहजता...ही झलकती थी। सहजता और सरलता ही उनके आभूषण थे, उन्होंने जीवन के अंतिम समय (मरण) को भी घर पर जिनवाणी सुनते हुए सहजता से ही वरण किया।

वे अनेक कालजयी कृतियों के अमर रचनाकार थे। गुरुदेवश्री के समयसार पर प्रवचनों के लगभग 6000 पृष्ठों का हिन्दी अनुवाद कर प्रवचन रत्नाकर के 11 भागों के सम्पादन द्वारा उन्होंने मुझ जैसे हजारों हिन्दी प्रान्त के लोगों को गुरुदेवश्री से परिचय कराया, इसके लिए देश के समस्त हिन्दी भाषी **चिरकाल तक उनके ऋणी रहेंगे...**

यह मेरा सौभाग्य ही रहा कि उनके द्वारा लिखित 'सुखी जीवन', 'पर से कुछ सम्बन्ध नहीं', 'हरिवंश कथा', 'ये तो सोचा ही नहीं' आदि 20 से अधिक पुस्तकों को छपने से पूर्व लेखन काल में ही पढ़ने का अवसर मिला। अत्यन्त शारीरिक अस्वस्थता, हार्ट की प्रोब्लम एवं ऑपरेशन के बावजूद भी उनकी कलम कभी रूकी नहीं। बैठे हुए कुछ न कुछ लिखते ही रहते थे, कभी चलते-फिरते दिखते तो भी हाथ में कोई किताब व प्रुफ के पेपरों के साथ...

तत्त्वज्ञान से भीगे महापुरुषों का जीवन कैसा होता है, यह उनको देखकर अनुमान लगाया जा सकता था। उनकी सौम्य शांत मुद्रा को देखकर विरोधियों का विरोध भी अपने आप ही मिट जाता था, यही कारण है कि उनका कभी किसी ने विरोध नहीं किया। जो थोड़ी देर के लिए भी उनके सम्पर्क में आया, वह उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहा।

उनका जीवन मेरे लिए आदर्श है। वे जैनपथप्रदर्शक के आद्य सम्पादक थे और मुझे उनके सान्निध्य में, उनका सहयोगी बनने का सौभाग्य मिला। 1996 से अब तक की लम्बी कालावधि में उनके जीवन से बहुत कुछ सीखने को मिला है। आज वे आशीर्वाद के हाथ हमारे सिर पर नहीं हैं, फिर भी हम कैसे कहें कि वे हमारे बीच नहीं हैं।

दीपक होते तो कदाचित् बुझ जाते,
पर वे तो रत्न थे, रत्न कभी बुझा नहीं करते।
वे ऐसे रत्न थे जो सदा चमकते रहेंगे,
अपनी कृतियों में हमारी स्मृतियों में...

हम अनाथ हो गये...

– शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल

बड़े दादा 'पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल' मेरे पिता, जिन्होंने कभी अपनी उपस्थिति दर्ज कराने की किंचित् भी कोशिश नहीं की; पर वे अथाह गहरी शून्यता छोड़ गये, किसी की चिंता नहीं की, पर सभी को चिंतित छोड़ गये, धन की और धनवान की परवाह नहीं की पर सबको गरीब छोड़ गये, उन्होंने जीवनभर ज्ञान बटोरा और ज्ञान ही बांटा अपनी कलम से, अपनी वाणी से और अपने आचरण से; पर आज हमको अनाथ छोड़ गये।

रातभर करवट बदलता रहता हूँ मैं, विचलित हूँ मैं, आकुलित हूँ मैं, सिहर उठता हूँ ये सोचकर कि कैसे भरेंगे एक ऐसे रिक्त स्थान को जो जीती जागती प्रतिमूर्ति हो सरलता/सहजता/शांत/विनम्रता और अध्यात्म की, निरर्थक हो गये हमारे सहस्राधिक अथक प्रयास, हमारी बिलखती आँखों के सामने काल ने उन्हें हमारे हाथों से छीन लिया और हम सब अकेले रह गये, हमने दादा को खो दिया।

अब मामला उनके उत्तराधिकारियों में उनकी दौलत के बंटवारे का है जो सबसे कठिन काम है, जिसे मैं चौराहे पर ला रहा हूँ, आपकी अदालत में पेश कर रहा हूँ –

हर वो व्यक्ति उनका उत्तराधिकारी है, जिसके जीवन को उन्होंने छुआ है, जिसने उनसे एक पंक्ति भी सीखकर जीवन में उतारी है, जो उनके जैसा जीवन जीने को तैयार है, उनकी तरह बनने की भावना भाता है, जो तत्त्व को जीवन में उतारने के प्रयत्न में जुटा है और सारी राजनीति से परे, यश की तमन्ना से दूर, स्वार्थी भावना से अलिप्त पवित्र भावना से तत्त्वप्रचार के मिशन की मशाल को आगे ले जाने को तत्पर है और अपने कल्याण के साथ लोगों के जीवन में अध्यात्म के रस को घोलने को कटिबद्ध है।

उनके ज्ञान और आचरण की दौलत किसी तिजोरी में कैद नहीं है वो तो जन-जन में बिखरी पड़ी है।

आप सबके प्रतिनिधि होने के नाते पगड़ी मेरे सिर पर बंधी, मैंने तो सिर्फ आपका प्रतिनिधित्व किया है, बस।

मुझे और मेरे परिवार को ढाढस बंधाने मुख्यमंत्री आये, केन्द्रीय मंत्री आये, विधायक आये, उनके शिष्य, भक्त और हमारे साथी आये, आप सब आये, उनकी श्रद्धांजलि सभा में बोलते रहे, सब समझाते रहे और हम सब भी समझते रहे, अब वे लौटेंगे नहीं, कुछ भी हो पर हम ठगे से रह गए...

दादा, कसम है आपकी... अब आपके जैसा बनने का प्रयास नहीं होगा, बस होगा....'इतनी शक्ति हमें मिले'। ●

पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल –

बड़े दादा ...

अब तक हमारे पास था वो बिन्दास सा रतन
लाखों में वो बस एक था हरदास का रतन
तेजस्वी था वह सूर्य सा व चाँद सा शीतल
सिन्धु में अब खो गया वो नायाब सा रतन

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

कैसी विडम्बना है कि जिनका दादागिरि से कोई नाता ही नहीं रहा वो जिन्दगीभर बड़े दादा कहलाते रहे।

कौन कहता है कि ''बड़े दादा नहीं रहे''?

बड़े दादा मात्र व्यक्ति नहीं वरन् एक मौन साधना थे, एक वह मौन साधना जो अब अपने हजारों मनीषी शिष्यों के माध्यम से चिरकाल तक मुखरित होती रहेगी।

एक पिछड़े और अभावग्रस्त माहौल से अपनी जीवनयात्रा प्रारम्भ कर शिखर तक पहुंचने की यह सम्पूर्णक्रांति शान्तिपूर्वक ही संपन्न हुई, बिना किसी कोलाहल और शोरशराबे के।

यहाँ शिखर तक पहुंचने से मेरा तात्पर्य मात्र किसी भौतिक उपलब्धि से ही नहीं वरन् इसमें उनकी आत्मोत्थान की वह प्रक्रिया सम्मिलित है, जिसमें उन्होंने एक साधारण श्रावक के रूप में अपनी जीवनयात्रा प्रारम्भ कर अंतत: सर्वज्ञता, क्रमबद्धपर्याय, वस्तु-स्वातंत्र्ययुक्त वस्तु-व्यवस्था के प्रति अटूट आस्था और जीवन में तद्जनित अपूर्व गरिमा व अनन्त शान्ति का प्रादुर्भाव किया है।

यह तो हुआ संक्षिप्त रुचि प्रबुद्ध पाठकों के लिए वर्णित उनकी जीवनयात्रा का निष्कर्ष। अब यदि इस क्रम को विस्तार दिया जाए तो कहा जा सकता है कि जीवन में उपलब्धियाँ और विजय हासिल करने की जनसामान्य की प्रक्रिया और विधि यह है कि अन्य सहयात्रियों और प्रतिस्पर्धियों को धकियाते और खदेड़ते हुए सभी प्रकार के नैतिक या अनैतिक तौरतरीके अपनाकर किसी तरह सबसे आगे निकल जाना, बस!

उक्त के विपरीत **बड़े दादा ने अपने जीवन में न तो किसी को अपना प्रतिस्पर्धी माना** और न ही अपने अन्दर किसी के साथ स्पर्धा की भावना पनपने दी। वे तो बस चल पड़े, चलते रहे अपने पथ पर, अविचल, अविराम; इस तथ्य से बेखबर और बेपरवाह कि कौन आगे दौड़ रहा है और कौन पीछे छूट गया।

वे आगे बढे तो कोई पीछे नहीं छूटा, वे ऊपर चढे तो कोई नीचे नहीं गिरा, वे बड़े बने तो कोई छोटा नहीं हुआ।

वे वह तूफान नहीं थे, जिसके कहीं से गुजर जाने मात्र से न जाने कितने गुजर जाते हैं, कितने उजड़ जाते हैं। **वे तो शीतल, मंद बयार (हवा) के समान थे, जो जहाँ से गुजरती है वहाँ शीतलता और सुकून बिखेरती जाती है।**

वे योगी थे, प्रतियोगी नहीं।
उनका विकास किसी के विनाश पर आधारित नहीं था।
उनका उदय सर्वोदय पर आधारित था।
वे अतिविशिष्ट थे, पर उनमें विशिष्टता का अहसास नहीं था, वैशिष्ट्य का प्रदर्शन नहीं था।

जैसा सरल उनका स्वभाव था वैसा ही उनका जीवन भी था। उनकी भाषा और शैली भी सरल ही थी और उनका कथ्य भी। वे सहजता से अपनी बात कहते थे और लोग सरलता से उनका आशय समझ जाते थे।

उनका जीवन शर्तविहीन था, न तो उनकी कोई शर्त थी और न ही उन्हें किसी तामझाम की आवश्यकता ही थी। वे कहीं भी रहकर किसी भी समय अपना कार्य कर सकते थे, विशेषकर लेखन। वे न तो मूड के मोहताज थे और न ही माहौल के। मैंने उन्हें समय-असमय अपने पलंग पर बैठे, अपने घुटनों की टेबिल पर कागज रखकर साधारण से पैन से असाधारण रचनाकार्य करते देखा है।

मैंने कभी उन्हें गिला-शिकवा करते नहीं देखा, अन्यथा जीवन में किसी न किसी से शिकायत किसे नहीं होती है।

मैंने उन्हें कभी किसी से याचना करते नहीं देखा। मानो उनका मूलमंत्र था – ''जो प्राप्त है वह पर्याप्त है''।

एक लेखक के रूप में उन्होंने साहित्य की हर विधा में अपनी कलम चलाई है। गद्य हो या पद्य, कहानी हो या उपन्यास, निबंध हो या नाटक। यही नहीं उन्होंने जिनवाणी के हर अनुयोग को छुआ। मौलिक रचनाओं के अतिरिक्त उन्होंने अनुवाद का कार्य भी किया। पाक्षिक पत्र ''जैनपथप्रदर्शक'' के संस्थापक सम्पादक के रूप में 40 वर्षों से अधिक बड़ा कार्यकाल पत्रकारिता के क्षेत्र में एक बड़ा कीर्तिमान है।

लगभग एक हजार स्नातक विद्वानों का गुरु होना अपने आपमें एक ऐसा कर्तृत्व है, जो किसी भी व्यक्ति को महापुरुषों की श्रेणी में स्थापित करने के लिए पर्याप्त है।

अधिक क्या कहूं, उक्त सभी के अतिरिक्त वे एक सच्चे, सरल, सहज और सादगीभरे व्यक्तित्व के धनी, निस्पृही महामानव थे।

मूलत: वे एक आत्मार्थी थे, मुमुक्षु थे। वे शीघ्र ही परमपद में स्थित हों – यही कामना है। ●

जैसे ज्वर वालों को दूध भी कड़वा लगता है?
वैसे ही जिसे अज्ञान का ज्वर चढ़ा हो,
कषायों की तपन हो तो
उसे सत्य भी कड़वा लगता ही है।

– सुखी जीवन

पूरे देश में विभिन्न स्थानों पर आयोजित हुईं श्रद्धांजलि सभाएं

अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के देहपरिवर्तन के समाचार सुनकर पूरे देश के मुमुक्षु मण्डलों, विविध संस्थाओं एवं क्षेत्रों पर उनकी स्मृति में शोक/श्रद्धांजलि सभाएं आयोजित हुईं, उनमें से कुछ समाचार यहाँ प्रकाशित किए जा रहे हैं –

आचार्य धरसेन महाविद्यालय में -

कोटा (राज.) : यहाँ पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के देहावसान के समाचार सुनते ही उसी दिन दिनांक 12-11-2019 को श्री प्रेमचंद बजाज चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित आचार्य धरसेन दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय एवं आचार्य समन्तभद्र विद्या निकेतन द्वारा मुमुक्षु आश्रम गिरधरपुरा कोटा में सामूहिक श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई।

सर्वप्रथम जिनेन्द्र भक्ति में वैराग्यवर्द्धक बारहभावना का पाठ करके पश्चात् आ. बड़े दादा के प्रवचनसार के आधार से हुये वीडियो प्रवचनों का पौन घंटे का सभी छात्रों एवं अध्यापकों ने श्रवण किया। इसके पश्चात् महाविद्यालय के प्राचार्य आदरणीय धर्मेन्द्रजी ने बड़े दादा एवं महाविद्यालय के साथ बिताये अनेक अनमोल प्रसंगों का वर्णन किया। साथ ही वरिष्ठ विद्वान पण्डित संजयजी जेवर, पण्डित गोम्मटेश शास्त्री, पण्डित निलय शास्त्री ने महाविद्यालय के समय को याद करते हुये अनेक संस्मरण सुनाये।

इस प्रसंग पर महाविद्यालय के अधीक्षक पण्डित अभिनयजी पण्डित नितेशजी, विद्या निकेतन से पण्डित पीयूषजी एवं अध्यापक पण्डित चर्चितजी शास्त्री, प्रबन्धक श्री चैतन्य जैन एवं श्री महाविद्यालय परिवार के सभी सदस्यगण भी उपस्थित रहे।

इसप्रकार सभी ने आदरणीय बड़े दादा श्री के प्रति सादर श्रद्धांजलि अर्पित की।

उदयपुर में तीन जगह सभाएं -

उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मुमुक्षु ट्रस्ट नेमिनाथ जैन कॉलोनी **सेक्टर-3** में अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की श्रद्धांजलि हेतु शोक सभा आयोजित की गई। इस अवसर पर डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री ने उनके जीवन परिचय के विषय में जानकारी दी तथा संपूर्ण मुमुक्षु समाज ने अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

हिरणमगरी सेक्टर-11 शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में शास्त्रसभा के पश्चात् बड़े दादा पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल को भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई।

सभा में पण्डित राजकुमारजी शास्त्री, श्री ताराचंदजी जैन, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री, डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित खेमचंदजी शास्त्री, पण्डित ऋषभजी शास्त्री, पण्डित प्रक्षालजी शास्त्री, पण्डित तपिशजी शास्त्री, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री, पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री, श्री सी.पी. जैन, श्री भोगीलालजी भदावत, श्रीमती भगवतीदेवी जैन आदि महानुभावों ने अपने उद्बोधन दिये। सभा का संचालन फैडरेशन के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री ने किया।

मुमुक्षु मण्डल-उदयपुर में आयोजित स्वाध्याय के पूर्व बड़े दादा के जीवन एवं व्यक्तित्व की चर्चा करके और मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई।

महावीर विद्यानिकेतन नागपुर में -

नागपुर (महा.) : यहाँ श्री महावीर विद्यानिकेतन में आदरणीय श्रद्धेय श्री बड़े दादा की स्मृति में आदरांजलि सभा का आयोजन किया गया।

सभा में टोडरमल महाविद्यालय के प्रथम बैच के विद्यार्थी महावीर विद्या निकेतन के निर्देशक डॉ. राकेशजी शास्त्री, सत्पथ फाउण्डेशन के संस्थापक पण्डित विपिनजी शास्त्री, प्रबंधक महोदय पण्डित सुदर्शनजी शास्त्री, पण्डित श्रुतेशजी शास्त्री, पण्डित देवेन्द्रजी बण्ड, पण्डित विनीतजी शास्त्री, पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित भूषणजी शास्त्री, विधानाचार्य पण्डित नितिनजी शास्त्री आदि विद्वानों ने परम आदरणीय बड़े दादा को श्रद्धांजलि सुमन अर्पित किये।

डॉ. राकेशजी शास्त्री श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए, साथ में मंचासीन विद्वत्गण

अन्त में सभी महानुभावों ने सामूहिक मौन धारणकर सिद्धगति की भावनापूर्वक सभा का समापन किया। सभा का सफल संचालन विद्या निकेतन के प्राचार्य पण्डित संयमजी शास्त्री ने किया।

चैतन्यधाम-गांधीनगर में -

चैतन्यधाम-गांधीनगर (गुज.) : यहाँ अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल (बड़े दादा) की स्मृति में आयोजित शोक सभा में श्रद्धांजलि दी गई। बड़े दादा को स्मरण करते हुए कहा गया कि आपका सम्पूर्ण जीवन जिनशासन की प्रभावना में व्यतीत हुआ, जिसमें पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट में रहकर भावी सिद्धों का मोक्षमार्ग प्रशस्त करने में एवं पामर से परमात्मा बनाने की विधि के आप विशेष शिल्पी रहे हैं।

आपने यह धर्म प्रभावना केवल आप तक सीमित न रखते हुए धर्मपत्नी श्रीमती कमलाबाई, पुत्र शुद्धात्मप्रकाशजी, पौत्र सर्वज्ञ भारिल्ल, पौत्री सिद्धि भारिल्ल को भी इस मार्ग हेतु सदैव प्रेरित किया, जिसके कारण आज देश-विदेश में समस्त मोक्षार्थी जीव तत्त्वज्ञान से लाभान्वित हो पा रहे हैं। छोटे भ्राता आदरणीय पण्डित हुकमचंदजी भारिल्ल एवं आप दोनों की जोड़ी ने न केवल मुमुक्षु समाज को अपितु समस्त दिगम्बर जैन समाज को तत्त्वज्ञान के प्रति उत्साहित किया।

चैतन्य विद्यानिकेतन के विद्यार्थी श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए

धर्मरत्न पण्डित बाबूभाईजी मेहता का भी आप पर विशेष स्नेह रहा है। चैतन्यधाम परिवार आपके परिवारजनों के साथ संवेदना व्यक्त करता हुआ यही मंगल भावना भाता है कि आप रत्नत्रय की निधि प्राप्तकर शीघ्र ही निज चैतन्यपद की प्राप्ति करें।

विदिशा में -

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ श्री महावीर जिनालय कहान नगर में वैराग्य सभा के माध्यम से श्रद्धांजलि समर्पित की गई। इस अवसर पर डॉ. आर.के. जैन चक्रवर्ती एडवोकेट, श्रीमती सुधा चौधरी, श्री चिन्मय बड़कुल, पण्डित राजेशजी शास्त्री आदि ने बड़े दादा के प्रति अपने उद्गार व्यक्त किये।

सभा का संचालन डॉ. मुकेशजी शास्त्री 'तन्मय' ने किया। अन्त में पण्डित भारिल्लजी जैसी महान विभूति शीघ्र ही मुक्ति पथ पर गमन करे - ऐसी भावना के साथ सामूहिक मौनधारण करते हुए वैराग्य सभा समाप्त हुई।

– प्रमोदकुमार जैन, विदिशा

राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ में -

दिल्ली : यहाँ श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के जैनदर्शन विभाग में जैनदर्शन के मूर्धन्य मनीषी पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के देह परिवर्तन के प्रसंग पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया।

विभागाध्यक्ष **प्रो. अनेकान्तकुमार जैन** ने उनका स्मरण करते हुए कहा - 'ऐसे गुरु मिलना दुर्लभ है।

डॉ. वीरसागरजी शास्त्री ने कहा - 'वे निरंतर साहित्य लेखन करते रहते थे, उनके द्वारा रचित जिनपूजन रहस्य पुस्तक पढकर आचार्य विद्यानन्दजी झूम उठे थे और हजारों पुस्तकें उन्होंने वितरित करवाई थीं।

प्रो. कुलदीपजी ने कहा - 'मैंने उनका साहित्य पढा है और मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ।' छात्र हिमांशु वर्धमान ने कहा कि मैंने उन्हें एक मौन साधक की तरह साधना करते हुए देखा। अंत में सभी ने 2 मिनट मौनपूर्वक दिवंगत आत्मा के लिये सिद्धगति की कामना की।

– हिमांशु शास्त्री वर्धमान

के.जे. सोमैया कॉलेज, मुम्बई में -

मुम्बई : शान्त और सरल व्यक्तित्व के धनी, मृदुभाषी पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के देहावसान के संदर्भ में दिनांक 18 नवम्बर को के. जे. सोमैया जैन अध्ययन केन्द्र, मुम्बई में एक प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया, जिसमें केन्द्र के लगभग 20 विद्यार्थी उपस्थित थे। सभी ने एक मिनट के मौन के साथ नवकार मंत्र का स्मरण किया। ज्ञातव्य है कि सोमैया जैन अध्ययन केन्द्र पर विगत दो माह पूर्व पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के सुपुत्र श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल का व्याख्यान आयोजित किया गया था, जिसका लाभ यहाँ अध्ययनरत सभी विद्यार्थियों ने प्राप्त किया था।

केन्द्र के निदेशक डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी जैन ने सभी को बताया कि पण्डित भारिल्लजी को हम बड़े दादा के नाम से संबोधित करते हैं, ये हमारे गुरु हैं और हमने इनसे सहज और सरल रीति से जैनदर्शन का ज्ञान अर्जित किया है। बड़े दादा ने सरल भाषा-शैली में अनेक पुस्तकों की रचना की है, जिनमें आम लोगों तक जैनधर्म की विशिष्टताओं को पहुंचाने का महान कार्य किया है। ये पुस्तकें हमारे केन्द्र के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं, इसके साथ ही विद्यार्थियों ने बड़े दादा की पुस्तकों के स्वाध्याय का संकल्प व्यक्त किया।

देश के कोने-कोने से विद्वान एवं श्रेष्ठीजन पहुंचे श्रद्धांजलि देने

दिनांक 14 नवम्बर को दोपहर में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया।

सर्वप्रथम डॉ. भारिल्ल द्वारा रचित बारह भावना का पाठ टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा किया गया, तत्पश्चात् पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर द्वारा मंगलाचरण किया गया।

इस अवसर पर सर्वप्रथम डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर ने पण्डित रतनचंदजी का जीवन-परिचय, साहित्य-यात्रा व कार्यक्षेत्र के बारे में बताया।

इस प्रसंग पर पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री प्रदीपजी जैन 'आदित्य' झांसी, पूर्व शिक्षा मंत्री एवं विधायक श्री कालीचरणजी सर्राफ जयपुर, श्री सुधांशुजी कासलीवाल (श्री महावीरजी अतिशय क्षेत्र के अध्यक्ष), एन.के. सेठी जयपुर, श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. सुदीपजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित अमृतभाई मेहता फतेपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर, डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित सौरभजी शास्त्री इन्दौर, डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा, श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा, श्री कांतिभाई मोटानी मुम्बई, श्री अशोकजी जैन (ज्ञानोदय विद्यालय, भोपाल), श्री सुनीलजी शास्त्री ग्वालियर, श्री मलूकचंदजी जैन विदिशा, श्री ताराचंदजी सौगानी जयपुर, श्री सुनीलजी सर्राफ खनियांधाना, श्री विनयजी पापड़ीवाल जयपुर, श्री गुलाबजी जडेजा (विनिंग टीम), डॉ. ममता जैन उदयपुर (शाश्वतधाम), श्रीमती कुसुम चौधरी किशनगढ आदि महानुभावों ने बड़े दादा के बारे में अपने मनोभाव व्यक्त किये। टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों में समकित शास्त्री द्वारा कविता पाठ किया गया।

अन्त में पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने अनेक व्यक्तियों व संस्थाओं द्वारा प्राप्त शोक सन्देशों का वांचन किया। सभा का संचालन **पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई** द्वारा किया गया।

श्रद्धांजलि सभा में डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील बड़े दादा का परिचय देते हुए

श्रद्धांजलि सभा में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए विद्वत्जन एवं श्रेष्ठीजन

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन तेरापंथ बड़ा मंदिर, जौहरी बाजार में दिनांक 13 नवम्बर को प्रात: प्रवचन के उपरान्त डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा बड़े दादा के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डाला गया। साथ ही श्री निहालचंदजी जैन पीतल फैक्ट्री, श्री महेन्द्रकुमारजी गोधा, श्री रवीन्द्रजी सौगानी आदि ने भी उनके योगदान को स्मरण करते हुए भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित की।

जयपुर (राज.) : यहाँ दिनांक 13 नवम्बर को सायं 8 बजे से महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर, जगदीश विहार-II जगतपुरा में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई, जिसमें जगतपुरा निवासी अनेक शास्त्री विद्वानों व अन्य जगतपुरा निवासियों द्वारा श्रद्धा-सुमन अर्पित किये गये एवं आदरणीय बड़े दादा द्वारा प्रदान की गई शिक्षा को जीवन में धारण करने की भावना भायी गयी।

सभा में गजेन्द्रजी शास्त्री, मनीषजी शास्त्री, सुनीलजी शास्त्री, सौरभजी शास्त्री, अनिलजी शास्त्री, सन्देशजी शास्त्री, श्रीमती प्रज्ञा जैन, श्रीमती निधि जैन ने बड़े दादा से जुड़े प्रेरणास्पद संस्मरण सुनाए।

- समस्त साधर्मीजन, जगतपुरा, जयपुर

ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ आज दिनांक 16 नवम्बर को रात्रि प्रवचन के उपरान्त अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल (बड़े दादा) के लिये श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक विद्वानों के माध्यम से उनके सहज जीवन पर चर्चा की गई व संस्मरण सुनाये गये। इस अवसर पर पण्डित श्यामलालजी विजयवर्गीय, पण्डित सुकुमालजी लुकवासा, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, पण्डित अनिलजी धवल भोपाल, श्री सतीशजी जैन (ठेकेदार) आदि महानुभावों ने अपने मनोभाव व्यक्त किये। इसके अतिरिक्त मुमुक्षु मण्डल ग्रेटर ग्वालियर, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन ग्रेटर ग्वालियर, समयसार विद्यानिकेतन (आत्मायतन) ग्वालियर आदि अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधियों द्वारा भी श्रद्धांजलि दी गई।

- प्राचार्य (समयसार विद्यानिकेतन, ग्वालियर)

खड़ैरी (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 19 नवम्बर को परम श्रद्धेय आदरणीय पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल (बड़े दादा) की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा रखी गयी। मुख्य वक्ता के रूप में पण्डित नरोत्तमदासजी, पण्डित पंकजजी शास्त्री, पण्डित सौरभजी शास्त्री ने अपने विचार व्यक्त किये।

पण्डित पंकजजी शास्त्री ने अपने विचार व्यक्त करते हुए दादा की सरलता, सौम्यता पर प्रकाश डाला एवं उनकी अनुपम कृतियों और उनके द्वारा किये संकलन के नाम बताये।

टोडरमल जैन युवा शास्त्री परिषद्, मुमुक्षु मण्डल एवं जैन युवा फैडरेशन की ओर से पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल को श्रद्धांजलि दी गई एवं उनके बताये मार्ग पर चलने की भावना व्यक्त की गई।

सभा का संचालन डॉ. राजेशजी जैन ने किया।

जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर में आचार्य कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन वीतराग विज्ञान मण्डल के अध्यक्ष श्री अशोक जैन ने बताया कि देहविलय का समाचार सुनते ही रात्रि में शोक सभा आमंत्रित की गई, जिसमें अनेक भाई-बहनों ने अपने विचार रखे। सभी ने अत्यन्त दु:ख प्रकट करते हुए आदरणीय बड़े दादा का मुमुक्षु समाज की अकल्पनीय सेवा, उनके साहित्य व चिन्तन को याद किया।

वास्तव में उन्होंने अपने नाम अनुरूप एक 'रतन' तुल्य कार्य किया है। उनके द्वारा समर्पित सेवाएं स्मारक भवन व मुमुक्षु समाज सदा याद रखेगा। वियोग के समय भी अल्प समय पर अंत्येष्टि कार्य पूर्णकर एक सच्चे जैन श्रावक अनुरूप कार्य संपन्न किया है। दादाजी शीघ्र ही निर्वाण प्राप्त करें - यही कामना है।

नई दिल्ली : अयोध्या जजमेंट के बारे में तथा जैन इतिहास भी अयोध्या को सुरक्षित रखे, इस बारे में श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा द्वारा बुलाई गई चिंतन बैठक में डॉ. सुदीपकुमारजी जैन दिल्ली ने पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के चिरवियोग का समाचार देते हुए उनके द्वारा जैन समाज को दिये गये योगदान के बारे में विस्तारपूर्वक बताया गया। सभा में उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। **- निर्मल कुमार सेठी**

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ शक्कर बाजार स्थित दिगम्बर जैन मारवाड़ी मन्दिर में दिनांक 13 नवम्बर, 2019 बुधवार प्रात: स्वाध्याय-पूजनादि के पश्चात् मन्दिरजी के विशाल प्रांगण में 'श्रद्धांजलि सभा' का आयोजन पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल की अध्यक्षता में किया गया। ट्रस्ट के सभी ट्रस्टियों ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री मनोजजी पाटनी द्वारा पारिवारिक संबंधों पर प्रकाश डाला गया। अध्यक्ष के रूप में पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल द्वारा बड़े दादा के जीवन पर प्रकाश डाला गया। बड़े दादा एक प्रवचनकार ही नहीं वरन् सिद्धहस्त लेखक-अनुवादक भी थे। 'विदाई की बेला' आदि उनकी प्रसिद्ध रचना है। समयसारजी पर गुरुदेवश्री के प्रवचनों का अनुवाद करके प्रवचनरत्नाकर के 11 भाग प्रकाशित कर आप अमर हो गये। अन्त में शांति पाठ, णमोकार मंत्र के जाप से सभा विसर्जित हुई। **- अनिल गंगवाल, इन्दौर**

बेलगांव (कर्नाटक) : यहाँ महावीर भवन में स्वाध्याय के पश्चात् बड़े दादा के सरल एवं धर्ममय जीवन के सन्दर्भ में चर्चा करके समस्त बेलगांव मुमुक्षु समाज द्वारा श्रद्धांजलि दी गई। **- मिथुन शास्त्री**

दलपतपुर-सागर (म.प्र.) : यहाँ महावीर जिनालय में आदरणीय बड़े दादा के सम्मान में शान्ति सभा का आयोजन किया गया।

सोनगढ (गुज.) : यहाँ विद्यार्थी गृह में पण्डित सोनूजी शास्त्री के निर्देशन में सभी अध्यापकों एवं विद्यार्थियों द्वारा बड़े दादा को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि दी गई।

नेपाल : यहाँ विराट नगर में श्वेताम्बर तेरापंथ में स्वाध्याय के पश्चात् उदयपुर से पधारे पण्डित वीरचन्दजी शास्त्री के सान्निध्य में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

बड़े दादा का विरह असहनीय

दिनांक 12 नवम्बर 2019 का दिन सम्पूर्ण मुमुक्षु समाज के लिए दु:खद था। जिस दिन सबके प्रिय परम आदरणीय बड़े दादा हम सबको छोड़कर चले गये। इस अवसर पर दिनांक 12-11-2019 को ब्र. कल्पना बहनजी जयपुर द्वारा बड़े दादा का जीवन परिचय दिया गया तथा संस्था के अध्यक्ष महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा, प्राचार्य डॉ. प्रवीणकुमारजी शास्त्री ने भी अनेक अनुकरणीय एवं प्रेरक प्रसंगों से विद्यार्थियों को अवगत कराया। इसप्रकार **आचार्य अकलंकदेव जैन न्याय महाविद्यालय धुवधाम** में आदरणीय दादा के जीवन के प्रेरक प्रसंगों को याद करते हुये श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

प्राप्त महत्वपूर्ण शोक संदेशों के अंश

आदरणीय बड़े दादा के देहविलय पर देश-विदेश से सैंकड़ों लोगों के शोक सन्देश हमें प्राप्त हुए, जिनमें से कुछ शोक सन्देशों के महत्वपूर्ण अंश यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

मुमुक्षु समाज के पुरानी पीढी के सुयोग्य विद्वान और जैन शासन की प्रभावना के प्रबल स्तम्भ पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा किये गये जिनधर्म प्रभावना हेतु कार्य उनके विशाल व्यक्तित्व के परिचायक हैं। पूज्य गुरुदेवश्री के ग्रन्थराज समयसार के प्रवचनों को सर्वप्रथम हिन्दी भाषा में प्रवचन-रत्नाकर के रूप में प्रसारित करने का श्रेय पण्डितजी को ही जाता है। उनके द्वारा रचित सुलभ, सरल साहित्य जैन साहित्य के भण्डार को अधिक समृद्ध करता है।

आदरणीय पण्डितजी साहब की जीवन शैली, सरल प्रवचन रीति, अनवरत तत्त्वसाधना, निस्पृह जीवन, उज्ज्वल चरित्र, सरल व्यक्तित्व सम्पूर्ण समाज और विद्वानों के लिए आदर्श हैं।

- अनन्तराय ए. शेठ परिवार, मुम्बई

मुमुक्षु समाज के मूर्धन्य विद्वान एवं सफल शिक्षण प्रदाता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के देहावसान से हम सबको अपूरणीय क्षति हुई है, श्री टोडरमल महाविद्यालय की स्थापना हुई, तब से पण्डित रतनचंदजी महाविद्यालय के प्राचार्य पद पर रहे और तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट परिवार से जुड़े रहे। उनके नेतृत्व में करीब एक हजार से अधिक जैनदर्शन के विद्वान तैयार हुए और समाज को उनका लाभ मिल रहा है।

पण्डितजी एक अच्छे लेखक थे, उनकी लेखनी में मृदुता, कोमलता और नम्रता प्रतिभासित होती है।

उनकी विदाई से वैराग्य का वातावरण बना है, उनके पवित्र आत्मा को रत्नत्रय की प्राप्ति हो - ऐसी भावना भाते हैं।

- बसंत एम.दोशी (श्री कुन्दकुन्द कहान दिग.जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट)

एक और सूर्य अस्त हो गया...

तीर्थधाम मंगलायतन के प्रति आपको बहुत स्नेह था, इसके पंच कल्याणक के समय भी आप पधारे थे। उनका प्रेरणादायी व आकर्षक जीवन हमें, हमेशा मार्गदर्शन देता रहेगा। 'प्रवचनरत्नाकर' के माध्यम से, तत्त्वज्ञान के रहस्य को, हिन्दी प्रान्त में, जन-जन तक पहुंचाने का मंगलश्रेय आपको जाता है।

मुमुक्षु जैन समाज को आपकी लेखनी से अनेक साहित्यिक लाभ हुए हैं। समाज आपका सदैव ऋणी रहेगा। यद्यपि मुमुक्षु समाज एवं मंगलायतन परिवार के लिए अपूरणीय क्षति है। उन्होंने सम्पूर्ण जीवन पवित्र बनाये रखा एवं जिनधर्म व जिनशासन को अपनी जीवन पूंजी बनाते हुए जन-जन में उसकी प्रभावना के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। हमारी भावना है कि उन्होंने अपने जीवन में जो तत्त्वज्ञान के संस्कार प्राप्त किये, उनमें उत्तरोत्तर वृद्धि करते हुए पूर्ण पद को प्राप्त करेंगे।

- पवन जैन, मंगलायतन-अलीगढ

मेरे जीवन परिवर्तन के शिल्पी

बड़े दादा हमसे विदा नहीं हुए हैं, उनके ग्रंथ सम्पदा के माध्यम से हमेशा हमारे साथ ही रहेंगे। बड़े दादा की आत्मा शीघ्र ही सिद्धों की श्रेणी में विराजमान हो - इसी भावना के साथ।

बड़े दादा को समर्पित कुछ पद्य

पूज्य गुरुदेवश्री के शिष्यों में थे रतन,
यशस्वी प्राचार्य में बने रतन,
सरल, मायावी स्वभाव में रतन,
वात्सल्यमूर्ति दादा थे वे रतन,
'इन भावों का फल क्या होगा'
महान कृति के लेखक थे रतन,
सत्ताईस पुस्तकों के जो लेखक,
मुमुक्षु गगन के थे वे रतन,
प्रवचन रत्नाकर प्रवचनों के,
सफल अनुवादक थे वे रतन,
ऐसे अनगिनत....रतनों के,
रत्नाकर 'रतनचंद' थे वे रतन।

- रजनीभाई दोशी, हिम्मतनगर

कुण्डलिया

रत्नाभा धूमिल हुई, हुआ सूर्य का अस्त।
चन्द गया आकाश से, लगता भारी कष्ट।।
लगता भारी कष्ट, आज मन द्रवित हो रहा,
चिर विदाई की पीड़ा से, सन्तप्त हो रहा।।
पर से तोड़ सम्बन्ध आप, निज मांहि विराजैं,
है विरागमय भाव, आप सुख अमृत पावैं।।

- विराग शास्त्री, जबलपुर

अध्यात्मरत्नाकर को जो खोया हमने...

अध्यात्मरत्नाकर को जो खोया हमने,
आज खुद अध्यात्म को रोते हुए देखा है।
जिस माँ ने यहाँ आने वाले हर एक को सम्हाला,
आज हमने उस माँ को बिखरते हुए देखा है।
जिन्होंने सबके हृदय में अध्यात्म भर दिया,
उनकी स्मृति में सबकी आँखों को भरते हुए देखा है।
पंचम वर्ष के काल में आपके जिस हाथ को मैंने थामा था,
सहारा देना तो बस बहाना था मुझे तो आपका स्पर्श पाना था।
जो होनहार वह होता है वीरा का यही बताना था,
महा और अवान्तर सत्ता को भी तुमसे जाना था।
वास्तव में हमने क्या खोया यह हम आपको बता नहीं रहे,
बस इतना कि हमें नवीन जीवन देने वाले हमारे पिता नहीं रहे।
इस सभा को देख कौन कह सकता है कि यह तुम्हारी विदाई की बेला है,
यह तो पुन: आपके निमित्त से लगा जिनवाणी के सपूतों का मेला है।
मैं तो बस एक हूँ मुझ जैसे तो हजार हैं,
माँ जिनवाणी हृदय समायी दादा का ही दुलार है।
जिस ध्वज को तुमने थामा दादा बस उसको ही फहराना है,
तुमने हम तक पहुंचाया हमें अनंत तक पहुंचाना है।

- समकित शास्त्री, खनियांधाना

चैतन्यरत्न की कीमत...

चैतन्यरत्न की कीमत को तम नहीं हर सकता है,
मिल जाएं चाहे मिट्टी में तिलिस्म नहीं खो सकता है।
है रत्न ज्ञान जिस ज्ञानी को परेशान नहीं हो सकता है,
आ जाये कोई भी तूफान हंसते हंसते सह सकता है।
परेशान हो गई परेशानी उसके हंसने की वृत्ति से,
हाथ जोड़कर कहने लगी ना मिल सकता कुछ लड़ने से।
है तत्वज्ञान जिस ज्ञानी को वह कहीं खो नहीं सकता है,
मिल जाए जिस मानव को वह स्वयं में अर्पित हो सकता है।
हुकम किसी का ना चल पाया जब हुकम का इक्का साथ में हो,
जिनदर्शन का रहस्य बताया चाहे कोई बच्चा हो।
शान्ति जिसकी मूर्ति है है कुमार संजीव सदा,
जो होना होकर रहता है जन-जन को यह सिखा दिया।
रत्न ज्ञान है ज्ञान ध्यान है, रत्न समाया रत्न में ही,
हर स्मारक रत्न से गुंफित पहचानो तुम अपनी निधि।।

– अर्पित शास्त्री, ललितपुर

विदेशों से प्राप्त श्रद्धांजलियाँ

पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की स्मृति में विदेशों से भी अनेक श्रद्धांजलियाँ प्राप्त हुई हैं; जिनमें –

डलास से श्री अतुलभाई खारा,
शिकागो से श्री अनंतजी पाटनी,
सिंगापुर से श्री अशोकजी पाटनी,
मयामी से श्री महेन्द्रभाई शाह,
न्यूजर्सी से नीरजा राजेन्द्रजी जैन,
लंदन से श्री भीमजी भाई शाह व मीनाबेन
आदि अनेक साधर्मियों ने अपने मनोभाव व्यक्त किये।

शोक समाचार

(1) **उदयपुर (राज.) निवासी श्री कन्हैयालालजी दलावत** का दिनांक 23 नवम्बर को 75 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आप श्री कुन्दकुन्द कहान शाश्वत पारमार्थिक ट्रस्ट के संस्थापक ट्रस्टी एवं उदयपुर मुमुक्षु समाज के आधार स्तम्भ थे। विगत 35 वर्षों से उदयपुर में तत्त्वज्ञान की धारा को फैलाने का कार्य कर रहे थे। समाज की प्रत्येक गतिविधि में आपका सक्रिय सहयोग रहता था।

(2) **जयपुर (राज.) निवासी डॉ. सुरेन्द्रकुमारजी शाह** का दिनांक 24 नवम्बर को शांतपरिणामों से 85 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया।

आप अनेक वर्षों से श्री रवीन्द्र पाटनी फैमिली चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा टोडरमल स्मारक में संचालित हॉम्योपैथिक चिकित्सालय में नियमितरूप से अपनी सेवाएं दिया करते थे। आप वर्षों तक श्री दिगम्बर जैन मंदिर दीवान भदीचन्दजी के अध्यक्ष पद पर रहे।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील प्राचार्य पद पर

श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 25 नवम्बर को रात्रि में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में विशेष सभा का आयोजन किया गया, जिसमें **डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील** को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के प्राचार्य पद पर नियुक्त किया गया।

कार्यक्रम में **पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री** को उपप्राचार्य के पद पर नियुक्त किया गया।

प्राचार्य डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील का सम्मान करते हुए

उपप्राचार्य पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री का सम्मान करते हुए

जैनपथप्रदर्शक के सम्पादक पद पर डॉ. संजीवकुमार गोधा

इसके अतिरिक्त जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) पत्रिका के सम्पादक का पद भार **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा** को सौंपा गया।

सभी विद्वानों का ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदिका ने तिलक एवं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने शॉल ओढाकर सम्मान किया।

इस अवसर पर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदिका जयपुर, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, विदुषी प्रतीति पाटील एवं श्रीमती आशा पाटील आदि महानुभाव मंचासीन थे।

सभा का संचालन पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की स्मृति में –

बड़े दादा का जीवन : सहजता दिवस

यह तो सर्वविदित है कि पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के तन, मन और वाणी से सहजता ही झलकती थी। यह बात उनके सम्पर्क में आने वाला प्रत्येक मानव अनुभव करता है। दिनांक 12 नवम्बर को परलोक पहुंचे इस महामानव का जन्म 21 नवम्बर 1932 को हुआ। पूरे देश में फैले उनके शिष्य समुदाय ने उनकी स्मृति में इस दिन (21 नवम्बर) को प्रतिवर्ष सहजता दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया। देहावसान के 12वें दिन ही उनकी स्मृति में उनके जन्म से लेकर अन्त समय तक की पूर्ण जीवन-यात्रा को प्रदर्शित किया गया।

टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 24 नवम्बर को दो सत्रों में अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की स्मृति में **'सहजता दिवस'** टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों की विभिन्न प्रस्तुतियों के साथ संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का प्रारम्भ संयम देशमाने द्वारा बड़े दादा कृत पद्यों के मंगल गीत से हुआ। सहजता दिवस का परिचय जिनकुमारजी शास्त्री ने दिया।

सभा में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल व समस्त भारिल्ल परिवार, देशभर आए हुए अनेक स्नातकगण, अनेक स्थानीय अतिथिगण, मुमुक्षु समाज के अनेक प्रतिनिधिगण एवं महाविद्यालय के समस्त छात्र व अधिकारीगण उपस्थित थे।

इस अवसर पर जहाँ एक ओर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. महेशजी शास्त्री भोपाल, पण्डित सुशीलजी शास्त्री भोपाल, पण्डित निखलेशजी दलपतपुर, पण्डित अमन शास्त्री दिल्ली, श्री सुरेशचंदजी एडवोकेट ललितपुर एवं श्री मुन्नालालजी ललितपुर (अध्यक्ष-स्वाध्याय मंडल), श्री धनसिंहजी पिड़ावा, सम्मेद खोत हुपरी ने बड़े दादा के संबंध में अपने विचार व्यक्त किये; वहीं दूसरी ओर विद्यार्थियों में अमन जैन आरोन ने बड़े दादा के अन्तर्बाह्य व्यक्तित्व, संयम जैन दिल्ली ने बड़े दादा की रचनाओं, निखिल जैन ने बड़े दादा के प्रमेय, स्वप्निल जैन सिवनी ने दादा की कृतियों का विषय व प्रारूप, पल जैन त्रिवेदी गांधीनगर ने दादा की शैली, पवित्र जैन आगरा ने साहित्य में निहित कलापक्ष व भावपक्ष, आप्तअनुशीलन दमोह ने साहित्य में रीति-नीति, दुर्लभ जैन गुढाचन्द्रजी ने साहित्य के वैशिष्ट्य, स्वानुभव जैन खनियांधाना ने दादा के जीवन से शिक्षाओं पर प्रकाश डाला; समकित जैन ईसागढ, संयम जैन गुढाचन्द्रजी, मयंक जैन बण्डा, दीपम जैन खतौली, अंकित जैन भगवां ने कविता-पाठ किया; सर्वज्ञजी भारिल्ल द्वारा डॉक्यूमेन्ट्री की प्रस्तुति हुई; अजितजी शास्त्री अलवर ने विचार व्यक्त करते हुए संस्कार सुधा (बड़े दादा की स्मृति में विशेषांक) की जानकारी दी; मयंक जैन बण्डा व अंकुर जैन खड़ैरी के निर्देशन में महाविद्यालय के छात्रों ने बड़े दादा के जीवन की घटनाओं पर आधारित लघु नाटिका का मंचन किया; अंकित जैन भगवां के निर्देशन में छात्रों ने नाटकीय प्रस्तुति के माध्यम से बड़े दादा की रचनाओं का परिचय प्रस्तुत किया; समर्थ जैन विदिशा द्वारा बड़े दादा के जीवन पर आधारित वीडियो, विनय जैन मुम्बई व सम्मेद खोत हुपरी के संयोजन में देशभर के विभिन्न विद्वानों के श्रद्धांजलि वीडियो एवं आशुतोष जैन आरोन द्वारा sand art के माध्यम से विदाई की बेला के विषय का वीडियो प्रस्तुत किया गया; अर्पित जैन भिण्ड ने एवं आशुतोष जैन आरोन व आयुष जैन गौरझामर ने बड़े दादा का चित्र बनाकर भारिल्ल परिवार को भेंट किया।

अन्त में दुर्लभ जैन गुढाचन्द्रजी द्वारा 'शुद्धातम है मेरा नाम...' पाठ के साथ सभा की समाप्ति हुई।

दोनों सत्रों का संचालन शास्त्री तृतीयवर्ष से समर्थ जैन विदिशा ने किया।

**'जब तक श्वांसा तब तक आशा',
इस उक्ति के अनुसार अपनी
वांछित वस्तु को पाने के लिए
व्यक्ति जीवन की अन्तिम श्वांस तक भी
आशान्वित रहते हैं;
अतः हताश होकर हिम्मत न हारो।**

- संस्कार

**जब तक विषयों में सुख-बुद्धि रहेगी,
तब तक विषयासक्ति छोड़ना संभव नहीं हैं।
अतः तत्त्वज्ञान के यथार्थ ज्ञान से सर्वप्रथम,
इस सत्य को समझना आवश्यक हैं कि
संयोगों में सुख हैं ही नहीं।**

- शलाका पुरुष, भाग 1

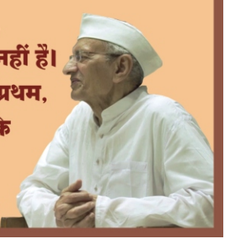

टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने सुनाई भारिल्लद्वय के स्वर्णिम जीवन की गौरव गाथा

कथाकार कथा सुनाते हुए

सहजता दिवस के उपलक्ष्य में सहज पुरुष के सहज व्यक्तित्व से परिपूर्ण सहज जीवन को **''प्रकाश रतनदीप का''** नामक लघु नाटिका में पिरोने का प्रयास किया गया। यह नाटिका पं. रतनचन्दजी भारिल्ल/आ. बड़े दादा को समर्पित है कि किस प्रकार वे कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी साहस के साथ अपने रत्नाकर होने का परिचय देते हैं। इसमें उनके जीवन की कुछ मुख्य घटनाओं को प्रस्तुत किया गया है - जैसे जन्म के पूर्व ही पिता हरदासजी द्वारा विद्वान् बनाने का संकल्प, विद्यालय जीवन में भी अनुज भ्राता पं. हुकमचन्दजी भारिल्ल के साथ मिलकर कठिन परिश्रम कर विद्याध्ययन किया। कहते हैं कि कठिन परिस्थितियों का सामना करके ही कोई पुरुष, महापुरुष बनता है। उनके ताऊजी का दिवंगत होना, माँ को बीमारी घर कर जाना, आर्थिक स्थिति कमजोर होना न जाने और कितनी कठिनाईयों का सामना कर दादाद्वय तत्त्वज्ञान के शिखर पर उन्नत हुए। विद्या अध्ययन के बाद जीवन निर्वाह हेतु एक स्थान से दूसरे स्थान जहाँ भी जाते अपनी अमिट छवि से धर्मचक्र को गौरवान्वित करते। इस प्रकार आखिरकार आ. छोटे दादा के साथ बबीना आकर बस गये परन्तु ये सिलसिला यूँहि रुकने वाला नहीं था कि समय ने फिर राह बदली और -

लघु भ्रात जयपुर बसे, किया एक दिन रात।
मिली राह गुरुदेव से कही तत्त्व की बात।।

बड़े दादा पिताजी के साथ

बड़े दादा और बड़ी मम्मी की वार्ता

नाटक के समस्त पात्र

इसप्रकार डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर आ गये और वे अपनी जीवन संगिनी श्रीमती कमलाजी भारिल्ल के साथ सरकारी नौकरी में संलग्न हो विदिशा पहुँच गये वहाँ भी 17 वर्ष व्यतीत करने के पश्चात् दुनिया के आठवाँ अजूबा स्वरूप इस ''रतन-हुकुम'' की जोड़ी को कौन तोड़ सकता है। क्योंकि -

अलग कर सके एक दूजे को नहीं बना ऐसा कोई शस्त्र।
घड़ी आ गयी फिर मिलाप की लगा हाथ ज्यों एक शुभपत्र।।

इसप्रकार आ. बड़े दादा को प्रशिक्षण शिविर में ही जयपुर आने के लिए आमंत्रित कर दिया गया। शीघ्र दादा द्वारा बड़ी मम्मी के मना करने पर भी हठवशात् सरकारी नौकरी का परित्याग कर जयपुर आने का दृढ़ निश्चय किया और फिर दादाद्वय ने मिलकर तत्त्वप्रचार किया।

नाटक में आदरणीय बड़े दादा के किरदार में शास्त्री तृतीय वर्ष से रवीन्द्र जैन 'बड़ी मम्मी की भूमिका में अनेकान्त जैन' पिता की भूमिका में शिवराज स्वामी तथा छोटे दादा के किरदार में अरिहंत जैन और सम्पूर्ण कथा को सुनाने वाले कथाकार के रूप में विनम्र जैन और अंकुर जैन तथा मंच के पीछे से भी बहन भव्या जैन एवं संयम शाह, नयन जैन और प्रतीक जैन ने अहम भूमिका निभाई। **- मयंक जैन, बण्डा (शास्त्री तृतीय वर्ष)**

'अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल' पुरस्कार की घोषणा

दिनांक 24 नवम्बर को सहजता दिवस के अवसर पर स्व. पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की स्मृति में प्रतिवर्ष पुरस्कार प्रदान करने की घोषणा करते हुए डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने बताया कि विद्वानों में से जो शास्त्री विद्वान जैनधर्म की गतिविधियों का नया अनुष्ठान करेंगे, जैसे - स्वलिखित पुस्तक, तत्त्वप्रचार प्रभावना में (शिविरों में) निष्पक्ष सहयोग, संस्थाओं के अधिकारी स्नातक द्वारा नवीन अनुपम गतिविधियों का आयोजन, पाठशालादि खोलने-संरक्षण-वृद्धि में अमूल्य योगदान देंगे, उनको इस पुरस्कार से दिनांक 21 नवम्बर को सम्मानित किया जायेगा। इसमें जैनधर्म की कहानियों का भाषा ऑडियो रूपान्तर, सम्पूर्ण किताब का ऑडियो रूपान्तर करना आदि कार्य यथायोग्य सम्मिलित है।

यह पुरस्कार प्रतिवर्ष 'सर्वोदय अहिंसा' की ओर से 11 हजार रुपये की राशि के साथ **'अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल पुरस्कार'** के रूप में दिया जायेगा। इस प्रसंग पर पण्डित संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा एवं पण्डित संजयजी सेठी भी उपस्थित थे।

ग्वालियर स्थित श्री समयसार विद्यानिकेतन में सहजता दिवस के अवसर पर आयोजित सभा

अध्यात्मरत्नाकर
पंडित श्री रतनचन्द भारिल्ल जी
के अंतिम शब्द उनके उपन्यास विदाई की बेला से....

"सभी रिश्ते शरीर के रिश्ते हैं। जब तक यह शरीर है तब तक आप के सब रिश्तेदार हैं, शरीर बदलते ही सब रिश्ते बदल जाएँगे। शरीर से ही इन रिश्तों की पहचान है। बताओं! आत्मा को कौन पहचानता है? जब किसी ने किसी के आत्मा को कभी देखा ही नहीं है तो उससे पहचान कैसे?

इस शरीर के भाई बन्धु! बेटे-बेटियों! व कुटुम्बीजनों! मेरा आप सब से कोई संबंध नहीं है। ये सब रिश्ते जिसके साथ थे, उससे ही जब मैंने संबंध विच्छेद कर लिया है तो अब आप से भी मेरा क्या संबंध? जब देह ही अपनी नहीं है तो देह के रिश्तेदार अपने कैसे हो सकते हैं? अतः मुझसे ममता छोड़ो, मैं भी इस दुखदायी मोह से मुँह मोड़कर सबसे संबंध छोड़ना चाहता हूँ। ऐसा किये बिना सुखी होने का अन्य कोई उपाय नहीं है।

अतः सब ऐसा विचार करें कि - मैं शरीर नहीं, मैं तो एक अखण्ड ज्ञानानंद स्वभावी अनादि-अनंत एवं अमूर्तिक आत्मा हूँ तथा यह शरीर मुझसे सर्वथा भिन्न जड़ स्वभावी, सादि-सान्त, मूर्तिक पुद्गल है, इससे मेरा कोई संबंध नहीं है।"

जिसे आपने कभी न देखा न पहचाना, उससे मोह कैसा? अतः आप मुझसे रागद्वेष का भाव छोड़ें। मैं भी आप सब के प्रति हुए मोह एवं रागद्वेष को छोड़ना चाहता हूँ। आप लोग मेरे महाप्रयाण के बाद खेद-खिन्न न हों तथा आत्मा-परमात्मा की साधना-आराधना में सदा तत्पर रहें।

बस, यही मेरा आपको संदेश है, उपदेश है, आदेश है और आशीर्वाद है। इसे जिस रूप में चाहें ग्रहण करें। पर कल्याण के मार्ग में अवश्य लगें। इस स्वर्ण अवसर को यों ही न जाने दें।

दिनांक 14 नवम्बर को प्रातःकाल पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की स्मृति में रखी गई शोक सभा

इस प्रसंग पर लघुभ्राता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल आदि सभी परिवारजनों के अतिरिक्त श्री अशोकजी गहलोत (मुख्यमंत्री-राजस्थान सरकार), श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर (राष्ट्रीय अध्यक्ष-दिगम्बर जैन महासमिति), श्री एन.के. सेठी जयपुर, श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी जयपुर, श्री प्रदीपजी जैन 'आदित्य' झांसी (पूर्व केन्द्रीय मंत्री), विधायक कालीचरणजी सर्राफ तथा पूरे देश से शताधिक संस्थाओं के प्रतिनिधि एवं विद्वानों ने उपस्थित होकर श्रद्धांजलि समर्पित की।

मुख्यमंत्री श्री अशोकजी गहलोत श्रद्धांजलि देते हुए

भारिल्ल परिवार को सान्त्वना प्रदान करते हुए मुख्यमंत्री अशोक गहलोत

सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन**
द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458

प्रकाशन तिथि : 28 नवम्बर 2019

प्रति,